Multi Disciplinary Research Journal
New Vision
ISSN No. 2394-9996

# New Vision

## Multi-disciplinary Research Journal

July 2015

Online version : http://www.milliyaresearchportal.com

Anjuman Ishat -e- Taleem Beed's
Milliya Arts, Science & Management Science College,
Beed- 431122 (Maharashtra)
Website : www.milliyasrcollege.org
E-mail.ID : newvisionjournal@gmail.com

# INDEX


| Sr. No. | Paper Name | Name | Subject | Page No. |
|---|---|---|---|---|
| (01) | Social values versus political hypocrisy in Nayantara Sahgal's This Time of Morning | Dr. Abdul Anees Abdul Rasheed. | English | 01 |
| (02) | Depiction of aspirations and sanguine approach to life in Chetan Bhagat's Five Points Someone: What Not to do at IIT. | Dr. Shaikh Ajaz Perveen Mohd. Khaleeluddin | English | 07 |
| (03) | Post-Independence Indian English Fiction: Critical Assessment | Dr. Landage R. A. & Lahoti R. K. | English | 12 |
| (04) | The Nowhere Man - Gloomy Shadow of Marginal life in Adopted Society | Smt. Sasane S. S. | English | 17 |
| (05) | Portrayal of Upper - Caste Women in Mahesh Elkunchwar's 'Old Stone Mansion' | Dr. Manisha D. Sasane. | English | 20 |
| (06) | आधुनिक हिंदी - काव्य में गांधीवाद का प्रभाव | डॉ. मिर्झा असद बेग रूस्तुम बेग | हिंदी | 24 |
| (07) | दसवें दशक के लघु उपन्यासों का सामाजिक अध्ययन | प्रो. डॉ. पठाण ए.एम. | हिंदी | 28 |
| (08) | `हिंदी ग़ज़ल में समसामयिकता` | प्रा. मुजावर एस.टी. | हिंदी | 31 |
| (09) | मौलाना अबुलकलाम आजाद का भारतीय राजनीति में योगदान | डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर | हिंदी | 33 |
| (10) | चरित्र निर्माण की दृष्टिसे साहित्य की भूमिका: एक अध्ययन | प्रा. डॉ. द्वारका गिते - मुंडे | हिंदी | 37 |

ISSN No. 2394-9996

# दसवें दशक के लघु उपन्यासों का सामाजिक अध्ययन

**प्रो.डॉ. पठाण ए.एम.**
मिल्लिया कला, विज्ञान व व्यवस्थापन शास्त्र
महाविद्यालय, बीड.

बीसवीं सदी के आखिरी दशक को दो प्रमुख घटनाओं ने प्रभावित किया हैं, भूमंडलीकरण और सांप्रदायिकता। देश की साम्यवादी विचारधारा में भूमंडलीकरण और उदारीकरण को संशय के कटघरे में ला खड़ा किया। इसी समय संचार क्रांती हुई और १९९५ के बाद भारत इंटरनेट के जाल से जुड़ गया। नए ज्ञान का भंडार खुल गया और अभिव्यक्ति के नए शीघ्र साधनों का इस्तेमाल बढ़ गया। मध्यम वर्ग का उदय और इस कारण समाज मूल्यों में आए बदलाव भी दसवें दशक में महत्वपूर्ण हैं। बाबरी कांड से देश में जो सांप्रदायिक घृणा का माहोल निर्माण हुआ उससे रचनाकार बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अपनी रचनाओं में सांप्रदायिकता का यथार्थ चित्रण किया। साथ-ही-साथ भारतीय मूल्यों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

दसवें दशक के लघु उपन्यास में महिला तथा पुरुष उपन्यासकारों ने समाज के विविध विषयों को अपनी रचनाओं में चित्रित किया हैं। दसवें दशक में हिन्दी लघु उपन्यास जगत् में महिला उपन्यासकारों का बोलबाला राहा हैं।

मैत्रेयी पुष्पा का नाम एक सशक्त लेखिका के रुप में जाना जाता हैं। वे जागरुक और प्रगतिशील लेखिका हैं। उन्होंने १९९३ में 'बेतवा बहती रहे' १९९४ में 'इदन्नमम' और 1997 में ' चाक' का सजृन किया ममत कालिया का 'दौड़' हिन्दी का ऐसा लघु उपन्यास हैं जो हमारे समुख कुछ मजबुत समस्याओ और सवालों को उपस्थित करता हैं। साथ-ही-साथ 'एक पत्नी के नोट्स' में पति-पत्नी के बीच बढ़ते मानसिक संघर्ष का बखुबी चित्रण करता हैं। दसवें दशक के कई उपन्यासकारों ने लघु उपन्यास रचनाओं में समाज के विविध विषयों को अपनी रचानाओं में चित्रित किया हैं। विशेष रुप से

स्त्री-उत्पीड़न, जाति-संघर्ष, सांप्रदायिकता, पुराने और नई पिढ़ियो के बीच का संघर्ष और समाज के बदलते नीति मूल्यों को चित्रित करनेवाले उपन्यासों को हम दृष्टिगोचर कर सकते हैं।

आज के समाज में भी नारी का शोषण घर, परिवार तथा समाज के द्ववारा किस प्रकार होता हैं इस का सुक्ष्मता से चित्रण 'बेतवा बहती रहें' इस लघु उपन्यास में **मैत्रेयी पुष्पा ने** किया हैं। आज भी स्त्री पहले तो अपने परिवार से शोषित होती हैं, बाद में समाज से होती हैं। नारी आज भी शिक्षा से वंचित हैं। पुष्पाजी ने पारिवारिक संबन्धो में बदलाव और उर्वशी जैसी विवश नारी की यातनामय स्थिती को चित्रित करते हुए पुरुष प्रधान समाज की ओर इशारा किया हैं। बेतवा की बेटी उर्वशी को ऐसा लगता हैं कि, मैं दुःख का भाग्य लेकर ही जन्मी हूँ। माता - पिता ने भी भाई अजित को पढ़ाया क्योंकि वह घर का आधार स्तंभ बन सके और उर्वशी को शिक्षा से वंचित रखते हैं क्योंकि लड़की को पराई घर की अमानत समजते हैं। यहाँ एक बेटा-बेटी के बीच भेद - भाव दिखाई देता हैं। उर्वशी के शादी को लेकर पिता तो परेशान हैं, लेकिन अजित अपनी बहन के शादी का खर्च उसे उठाना न पड़े इस विचार में चिंतीत हैं। वह ऐसा रिश्ता चाहता हैं कि लड़केवालों से ही कुछ मदद मिल जाए, इसी कारण वह अपनी बहन का रिश्ता चार बच्चों के पिता के साथ तय कर देता हैं। पुष्पा जी ने आधुनिक समाज में आज जो पारिवारिक संबंधो में बिखराव आ राह हैं, उनका बहुत अच्छी तरह से जिक्र किया

हैं। उर्वशी के पति के मृत्यू के बाद अजित उर्वशी के ससुराल वाले से लढ़ाई और झगड़ा कर, उनके सम्पत्ती पर अपना अधिकार बताकर उर्वशी को अपने घर ले आता हैं। घर आने के बाद उर्वशी को माँ के द्वारा पता चलता हैं कि अजीत भैया ने मीरा के पिता के साथ उसकी शादी तय करद हैं। वह सोचती हैं। कि, इससे तो अच्छा मर जाना हैं और वह नदी में कुद जाती हैं लेकिन वह एक मल्लाह द्वारा बच जाती हैं। बाद में वह अपना भाग्य समझकर अजित के निर्णय को स्वीकार कर लेती हैं। तब वह अपनी माँ से कहती हैं कि -"जो हमारे भाग में बदौ हैं अम्मा, उसे कौन पलट सकते हैं, वहतो होंके ही रहते हैं।" अंत में उर्वशी अपनी हर पीड़ा को सहते हुए विवश यातनामय जीवन जीती हुई बेतवा में समा जाती हैं। इस तरह पुष्पा जी ने इस उपन्यास में स्त्री शोषण के ग्रामीण रुप का वास्तव यहाँ पर चित्रित किया हैं।

'चाक' इस उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने समाज की मान्यताएँ, मूल्यों एवं संस्कार जो अपरिवर्तनिय है, दृष्टिगोरच किय हैं। पुरुषत्व यानी श्रेष्ठत्व और स्त्रीत्व यानी हीन या कमजोर इस जड़ विचार का बखुबी विश्लेषण किया हैं। इस उपन्यास की कथा सारंग इस पात्र के इर्द-गिर्द रची गई हैं। इस रचना में स्त्री का अपने यौन जीवन के हक्क को जताने का संघर्ष दिखाया गया हैं। सारंग, मास्टर श्रीधर से पति होने के बावजूद भी शरीर संबंध बनाती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने एक स्त्री पात्र से स्पष्ट रुप में व्यक्त किया हैं, "मईयाँ! तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गयी हो। मेरे चाल चलन की झण्डी फहराना जरुरी हैं? बिरथन की छान-बीन करने में लगी हो, आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पुछती कि तु किसके संग सोया था? अब उसकी बाँह गहू ले। मेरे पीछे तेरही तक भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रही होती कि पूत की उजड़ी जिंदगी बस गयी। पर मेरी फजीहत कराने पर तुली हो"। [2]

**गीतांजलि श्री** ने 'माई' इस लघु उपन्यास में घर, परिवार और समाज में स्त्री के आज़ादी को लेकर वास्तविकता पर प्रकाश ड़ाला हैं। घर में स्त्री तभी आदर पाती हैं जब वह घर के मूल्यों के साथ चलती हैं और अपना अस्तित्व भूल जाती हैं। माई इसी में सुखी हैं। वह परिवार से आज़ाद होने से इन्कार करती हैं। अपने परिवारिक परिवेश में ही रहना पसंद करती हैं। माई के बेटा-बेटी सुबोध और सुनैना कोशिश करते हैं कि माई आज़ाद हो सके, नई जिन्दगी जी सके, मगर माई बदलने को तैयार नही हैं। उन्हीं के शब्दो में - "लेकिन हमें तो माई में आजाद इच्छाएँ भरनी थी।... एक हम ही थे जो उसे खोखला नहीं छोड़ना चाहते थे... वह कमजोर है, कठपुतली हैं, हमारे सिवाय उसका कोई नही... हम उसके लिए लड़ते हैं और वही पीछे हट जाती हैं।"

**ममता कालिया** के 'एक पत्नी के नोट्स' इस उपन्यास में लघु उपन्यास की सारी विशेषताएँ पायी जाती हैं। संदीप और कविता इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। सुंदर और उच्च शिक्षित पत्नी और बुध्दिमान तथा उच्च पदवाला पती इनमें प्रेम विवाह होने के बावजुद भी इनमें सामाजिक तनाव पनपता हैं। ममता कालिया ने इस रचना में पुरुष के पुरुषत्व दिखाने के अवगुन को बहुत अच्छी तरह से जीवंत रुप में दर्शाया हैं। पुरुषों की यही मानसिकता स्त्री को कितना आहत कर देती हैं, यह इसमें दिखाया गया हैं।

रवींद्र कालिया का 'ए.बी.सी.डी.' लघु उपन्यास विधा को नया मोड देनेवाला हैं। भारतीय समाज के अनेक विसंगत मूल विरोधाभास उत्पन्न करनेवाली परिस्थितियों का चित्रण करता हैं। साथ हि विदेशो में जा बसे भारतीयों की संताने और बढ़े भारतीय इन दो पिढ़ीयो के बीच का संघर्ष 'ए.बी.सी.डी.' इस उपन्यास में बखुबी दर्शाया गया हैं। दो पिढ़ीओ में सामाजिक टकराव होना यह एक सामाजिक वास्तविकता हैं। भारत में विवाह बंधन सात जन्मों तक माना जाता हैं, वहीं तलाक यह विदेशी नई भारतीय पिढ़ीयो में आम बात हैं। उपन्यास की शुरुवात ही तलाक के वार्तालाप से होती हैं।- 'प्रिय प्रभु' शीनी तलाक लेने पर उतारु। तुम्हारी भाभी ने खाना पीना छोड़ा। घर में मातमी माहौल। प्रपत्राचार्य को शीनी जन्मपत्री दिखाकर उपचार पुछे। लगर जी मत करता,

हरदयाल।" इस लघु उपन्यास में नई पीढ़ी के जीवन व्यापन करने के पाश्चात्य तौर-तरिकों को दर्शाया गया हैं। के आधुनिक सामाजिक वास्तविकता को 'ए.बी.सी.डी.' इस लघु उपन्यास में अच्छी तरह से चित्रित किया हैं। इस लिए यह लघु उपन्यास रचना आज के पाश्चात्य भारतीय समाज को दर्शाने वाली प्रतिनीधिक रचना हैं।

दसवें दशक के सामाजिक उपन्यासों में सांप्रदायिकता एक विषय प्रमुख रुप से छाया रहा हैं। बाबरी कांड के बाद किस तरह से सांप्रदायिक सौहार्द को आघात पहुँचा इस सामाजिक वास्तविकता का चित्रण अनेक उपन्यासकारों ने किया हैं। सामाजिक सौहार्द, अनेकता में एकता, स्त्रियाँ, वयोवृध्दो और पड़ोसियों की सुरक्षा और इज्जत, सामाजिक न्याय और अपनापन यह भारतीय संस्कृति के प्रमुख गुण हैं। परंतु कुछ लोग नीजी स्वार्थ के लिए देश में सांप्रदायिकता फैलाकर सामाजिक सौहार्द को समय-समय पर कलुशित करते हैं। दसवें दशक में सांप्रदायिकता बड़ी भया वह बनकर बुध्दिजीविओं को और संवेदनाशील रचनाकारो को झिंझोड कर रखती हैं। भगवान सिंह कहते है- "यह जो सांप्रदायिकता हैं, वह भी एक तरह दिमागी बुखार हैं। यह जो सांप्रदायिकता की राजनीति करनेवाले हैं और जो धर्म के नाम पर अपनी दूकान चलाने वाले मुल्ले और पंडे होते हैं, ये सभी दिमागी बुखार को पालनेवाले होस्ट हैं। इससे उनका कुछ बिगड़ता नही हैं..... बल्कि वायरस को फैलाने की धोस देकर राजनीतिक सौदेबाजी करते हैं।"[4]

मार्क्सवादी लेखकों ने अपने अनुभवों से दंगे. हिन्दुओं की असहिष्णुता का परिणाम हैं और मुसलमान केवल असुरक्षा के डर से सांप्रदायिक होता हैं इस प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं। यही वजह हैं कि, **'शिवमूर्ति'** के 'त्रिशूल,' **गीतांजति श्री** के 'हमारा शहर उस बरस' तथा **पियवंद के** 'वे वहाँ कैद हैं' इन लघु उपन्यासो में हिंदू सांप्रदायिकता निशाने पर हैं। परंतु जहाँ एक ओर संप्रदायिकता के वास्तव रुप को उपन्यासकारों ने बताया हैं, वही दूसरी ओर सांप्रदायिक सौहार्द के लिए प्राणार्पण करनेवाले सच्चे भारतीय को भी औपन्यासिक रचनाओं में दिखाया हैं।'कालीकथा','वाया बाईपास' में अमोलक बाबरी मस्जिद को ध्वंस से बचाने की कोशिश में दम तोड़ देता हैं। इस संबंध में डॉ. सत्यकाल ने स्पष्ट कहा हैं "आमोलक को जिंदा कर उपन्यास लेखिका ने यह सिध्द कर दिया हैं कि कट्टर पंथी लाख प्रयास करे वे हिंदुस्थान की धर्म निरपेक्ष बुनियाद को नहीं उधेड़ सकते।"[6] दसवें दशक में समाज में फैली हुई सांप्रदायिकता को समाजिकता को दर्शाने का सफल कार्य उपन्यासकारों ने किया हैं। रमाकांत के 'जुलूस वाला आदमी' में इनाम चौक और रामचबूतरा का विवाद,'मंगल भवन' में विक्रम मास्टर की हिंदूवादी बेटे के दृष्टिकोण से असहमती, 'निन्यान्वें' में आयोध्या की दूर्घटना,'काला पहाड़' और 'इदन्नमम' में ग्रामीण अंचल में मंदीर - मस्जिद विवाद तथा 'शहर में कर्फ्यू' में दंगे और उसके बाद लगनेवाले कर्फ्यू के दौरान सबसे जादा तकलीफ कौन उठाते हैं इसका चित्रण किया हैं। समाज में सांप्रदायिकता फैलानेवाले साधन और साध्य दोनों को चित्रण हम नई औपन्यासिक रचना में देख सकते हैं।

सार रुप में कह सकते है कि समाज की हतबलता, हिंसा झूठ का बोलबाला, समाज के धर्मश्रध्दाओं का गलत इस्तेमाल, बाबरी पतन के पश्चात का सांप्रदायिकता, नारी चेतना, दलित चेतना आदि का वास्तविक चित्रण दसवें दशक के लघु उपनयासों में चित्रित हुआ हैं। इस वास्तविकता को कोई नकार नहीं सकता।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


(१) मैत्रेयी पुष्पा - बेतवा बहती रहे-पृ.स.११६

(२) मैत्रेयी पुष्पा - चाक- पृ.स. १९

(३) रवींद्र कालिया - ए.बी.सी.डी.-पृ.स.५

(४) भगवान सिंह - उन्माद - पृ.स.७९

(५) डॉ. ब्रजेश कुमार शर्मा - दसवें दशक के आँचलिक उपन्यास - पृ.स.१४